International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 73-77

प्रभा खेतान की रचनाओं में चित्रित समाज एवं संस्कृति

रम्या वी.
हिंदी विभाग, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान, गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गुजरात, भारत।

प्रस्तावना

प्रभा खेतान प्रभा खेतान की रचनाओं में भिन्न-भिन्न समाजों तथा संस्कृतियों के पात्रों आते हैं। उनमें भारतीय परिवेश, मारवाड़ी परिवेश, विदेशी परिवेश, ग्रामीण परिवेश एवं शहरी परिवेश का सामंजस्य दिखाई देता है । मगर प्रभा खेतान के कथा साहित्य की केन्द्र बिंदु मारवाड़ी समाज है । क्योंकि उनका जन्म मारवाड़ी समाज में हुआ । ब्यूटी थेरापी के कोर्स के लिए विदेश जाने के कारण प्रभा खेतान का परिचय विदेशी स्त्री पुरुषों तथा प्रवासी भारतीयों से होता है। उन्हें यह भिन्न-भिन्न समाज के लोगों के व्यवहार, चरित्र, भाषा तथा संस्कृति को समझने में सहायक बन जाता है। प्रभा खेतान के उपन्यासों के परिवेश के संबंध में उषा कीर्ति राणवत लिखती हैं "प्रभाजी के उपन्यासों से गुजरते हुए महसूस होता है कि परिवेश ही उनके लेखन की आधारशिला है। वे परिवेश से प्रेरणा पाकर युगीन सत्य से हमें रूबरू करवाती हैं।"[1] प्रभा खेतान अपने परिवेश से विस्तृत अनुभव मिलने के कारण लेखन में भी उन्हें लाने की कोशिश करती है।

मारवाड़ी समाज में भी लड़कियों के जन्म से ज्यादा खुशी नहीं मिलती है। लड़कियों की शिक्षा भी उस समाज में जरूरी नहीं लगता है । लड़कियों की शादी कम उम्र में होना भारत में लगभग हर समाज में अनिवार्य माना जाता है और मारवाड़ी समाज के लोगों में भी यही धारणा है। प्रभा खेतान के पूर्वजों ने वर्षों पहले राजस्थान से बंगाल में पलायन किये । उनकी रचनाओं में इसका जिक्र मिलता है । मारवाड़ी होने के कारण प्रभा छात्रों द्वारा कभी कभी 'मेंडो' बोलकर मजाक का पात्र बन जाती है । प्रभा खेतान की रचनाओं में एक तरफ ग्रामीण जनता की ममता है तो दूसरी तरफ शहरी परिवेश के संबंधों में विघटन तथा स्वार्थता पूर्ण व्यवहार दिखाई देता है । संस्कृति के संबंध में डॉ. प्रीतिप्रभा गोयल लिखती हैं "संस्कृति मानव को मानव बना देने वाले कतिपय विशिष्ट तत्वों में अन्यतम है। वे सारी अभिव्यक्तियाँ ही संस्कृति हैं, जो मनुष्य को मानसिक, आत्मिक एवं बौद्धिक विशिष्टता प्रदान करती हैं। किंतु यह संस्कृति किसी एक व्यक्ति के कुछ समय के अथवा सम्पूर्ण जीवन के कार्यों से निर्मित नहीं होती। यह संस्कृति तो किसी भी देश के ज्ञात अथवा अज्ञात असंख्य व्यक्तियों के दीर्घकालीन एवं कष्टसाध्य प्रयत्नों के परिणाम से पल्लवित पुष्पित होती है।"[2] हम ऐसा कह सकते हैं कि संस्कृति के निर्माण में किसी एक व्यक्ति की बजाय अनेक व्यक्तियों का योगदान रहते हैं तथा मानवता के निर्माण में संस्कृति की बड़ी भूमिका है।

प्रभा खेतान के 'आओ पेपे घर चलें', 'एड्स', 'छिन्नमस्ता' आदि उपन्यासों में भारतीय परिवेश के साथ साथ विदेशी परिवेश भी आ रहा है । विदेशी परिवेश की स्त्रियाँ भी प्रेम के त्रिकोण में फंसती है । प्रभा खेतान के कथा साहित्य के परिवेश के संबंध में डॉ. उषा कीर्ति राणावत लिखती हैं "वैश्विक धरातल पर बदलते हुए युग बोध के साथ मारवाड़ी एवं विदेशी स्त्री की समस्याओं को मुख्य विषय बनाते हुए आपने कथा-साहित्य का अनूठा सृजन किया है।"[3] 'आओ पेपे घर चलें' की मिसेज डी, मरील, क्लारा ब्राउन, कैथी, हेल्गा, आइलिन; 'एड्स' उपन्यास की कुक्कू, सोफिया; 'छिन्नमस्ता' उपन्यास की जूडी; 'अग्निसंभवा' की आइवी आदि विदेशी परिवेश की स्त्रियों के लिए उदाहरण हैं । 'छिन्नमस्ता' उपन्यास की प्रिया, छोटी माँ, नीना; 'आओ पेपे घर चलें' उपन्यास की प्रभा; 'अपने अपने चेहरे' उपन्यास की रमा, मिसेज गोयनका, रीतू आदि स्त्रियाँ मारवाड़ी परिवेश की प्रतिनिधि स्त्री के रूप में आती हैं । प्रभा खेतान के उपन्यासों के आधार पर यह निर्णय पर पाठक पहुँच सकते हैं कि चाहे विदेशी परिवेश हो, मारवाड़ी परिवेश हो या भारतीय परिवेश हो तलाक की स्थिति भी दिखाई देती है।

प्रभा खेतान की रचनाओं में चित्रित समाज एवं संस्कृति को निम्न लिखित बिंदुओं के माध्यम से विस्तृत रूप में देखा जा सकता है।

विदेशी परिवेश एवं संस्कृति

लेखिका व्यापार के कारण विदेश भी जाती हैं । वहाँ के परिवार की स्थितियों को भी उनके उपन्यासों में देखा जा सकता है । विदेशी पृष्ठभूमि में लिखा गया प्रभा खेतान के 'आओ पेपे घर चलें', 'एड्स', 'अग्निसंभवा' आदि उपन्यासों में एकल परिवार का जिक्र आया है । विदेशी परिवार की अधिकांश स्त्री पात्रों एकल परिवार में रहती हैं ।

इस कारण से तनाव भी उनके साथ ही रह जाता है। विदेशी परिवार के एकल परिवार में भी पति-पत्नी के बीच का विश्वास खोने की स्थिति और पति-पत्नी के बीच आनेवाली दूरियाँ बहुत आ जाती हैं। 'एड्स' उपन्यास के एंड्रू स्पेंसर के दोस्त के साथ अनैतिक संबंध रखने के कारण एंड्रू की पत्नी सोफिया को एड्स की बीमारी आ जाती है और यह एंड्रू को उसकी पत्नी के प्रति विश्वास खोने की स्थिति होती है। एंड्रू को पत्नी की बीमारी के बाद अकेलापन घेर लेती है।

प्रभा खेतान की कुछ रचनाओं में उनका प्रवास जीवन का जिक्र आता है। उनके 'आओ पेपे घर चलें' 'अग्निसंभवा' तथा 'एड्स' उपन्यासों में प्रभा के प्रवास जीवन के अनुभवों सामने आते हैं। लेखिका की 'उसे रविशंकर का कैसेट चाहिए', 'भूकंप' आदि कहानियों में भी उनके प्रवासी जीवन के संदर्भों आते हैं। इससे पाठकों को प्रवासी संस्कृति तथा समाज का बोध होता है। प्रभा खेतान के प्रवास जीवन के अनुभवों का वर्णन उनकी आत्मकथा में भी खूब मिलता है। 'आओ पेपे घर चलें' उपन्यास की आइलिन प्रभा विवाहित पुरुष से प्यार करने के कारण कहती है कि ईसाई धर्म में इसे पाप माना जाता है। आइलिन प्रभा से कहती है "तुम्हें और कोई नहीं मिला, इस विवाहित व्यक्ति के अलावा। जानती हो ईसाई धर्म में ऐसे नाजायज संबंधों को यानी एडल्ट्री को पाप की संज्ञा दी गयी है।"[4] तब प्रभा कहती है "हमारे हिंदू धर्म में इसे पाप नहीं कहा गया। मैंने अपने हिंदू पण्डित से पूछा है। हमारे शास्त्रों में बहुविवाह का प्रचलन है।"[5] विवाहेतर संबंध को कुछ धर्मों में पाप माना जाता है तो कुछ धर्मों में बढ़ावा देता है। आइलिन प्रभा से पूछती है "मगर तुमने तो इस व्यक्ति से शादी नहीं की।"[6] आइलिन के इस प्रश्न में प्रभा विवाहित पुरुष के पीछे पड़ने को लेकर खेद व्यक्त हो जाता है। प्रभा को बाद में पता चलता है कि आइलिन भी विवाहित पुरुष के प्यार में फंस चुकी है। तब प्रभा परंपरा की ओर इशारा करके कहती हैं "मन से वरण करने को हम गन्धर्व विवाह कहते हैं। यह तो 1952 में हिन्दू मैरिज एक्ट के कारण एकल विवाह का प्रचलन बढ़ा। लेकिन कानून बना देने से कोई परम्परा खतम नहीं हो जाती।"[7] एकल विवाह विवाहित व्यक्ति को बंधन की स्थिति में रहने के लिए मजबूर करता है। भारतीय परिवेश में जीनेवाले स्त्री पुरुषों को विदेशी परिवेश में जीनेवाले स्त्री पुरुषों की तुलना में विवाह के पहले एक दूसरे से परिचय होने की मौका कम मिलता है। आइलिन का कई बार तलाक हो जाती है। मगर बूढ़ी होकर भी आइलिन अपने प्यार को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होती है और वे रोजर नामक विवाहित पुरुष से प्यार करती है। वह प्रभा से कहती है "मैं अपने पहले पति का चेहरा हर पुरुष में खोजती रहती हूँ। किसी में उसका आवाज पाती हूँ, कहीं उसकी दृष्टि, कहीं उसका स्पर्श। कोई बिलकुल उस जैसा लगता है।"[8] आइलिन बुढ़ापे में भी पहले पति को खोजने की प्रवृत्ति नहीं छोड़ती है। प्रभा खेतान के उपन्यासों की भारतीय स्त्रियाँ विदेशी स्त्री की तुलना में तलाक कम लेती हैं। भारतीय स्त्रियों की सहने की प्रवृत्ति इससे व्यक्त हो जाती है। आइलिन प्रभा का परिचय उसका रिश्तेदार जैफ से कराती है। आइलिन का इरादा प्रभा का डेटिंग जैफ के साथ कराना था। प्रभा डेटिंग के लिए जैफ के साथ जाती है। मगर जैफ के साथ बात करके उसे पहले अच्छा लगता है और बाद में वह अपने में खोने लगती है। प्रभा को उसके प्रेमी डॉक्टर सर्राफ को छोड़कर जैफ के साथ बात करना ठीक नहीं लगता है। जैफ प्रभा खेतान से अपने में खोने का कारण पूछते समय वे कहती हैं "हम भारतीय लड़कियाँ ऐसे किसी अपरिचित पुरुष के साथ लंच-डिनर पर अकेले नहीं जातीं। मेरे घरवाले इसे कभी पसंद नहीं करेंगे। मैं खुद भी एक पारंपरिक लड़की हूँ...डेटिंग-वेटिंग के चक्कर से बचकर रहना चाहती हूँ। तुम एक भले व्यक्ति हो और मैं आशा करती हूँ कि तुम मेरी भावना की कदर करोगे।"[9] प्रभा खेतान जानती है कि उसका समाज पारंपरिक धारणाओं के बल पर चलती है और विदेश जाकर अन्य व्यक्ति के साथ जुड़ना अनुचित है। मिसेज डी का पति डॉक्टर डी क्लारा ब्राउन के विवाहेतर प्रेम के कारण दुखी बन जाती है। हर कहीं औरतों की त्रिशंकु बनकर जीने की स्थिति के बारे में प्रभा पूछते समय आइलिन कहती है "कहाँ नहीं जीतीं वे? दुनिया में ऐसा कोई कोना बताओ, जहाँ औरत के आँसू नहीं गिरे?"[10] 'आओ पेपे घर चलें' उपन्यास में प्रभा खेतान विदेशी स्त्रियों को देखते समय सोचती हैं कि उसकी बहनों और भाभियाँ बाल सफेद होते समय या शरीर मोटा होते समय उसे ठीक करवाने के लिए कहीं नहीं जाती हैं और जो हो रहा है उसे वैसा का वैसा स्वीकार करती हैं। मरील चालीस वर्ष की तलाकशुदा स्त्री है। उसका पति बीस वर्ष की लडकी के साथ भाग जाता है। कोर्ट में जाने के पश्चात मरील का पति हजार डालर महीने में भेज देने के लिए मजबूर हो जाता है। प्रभा मरील से पति के बारे में पूछते समय वह कहती है "भाग गया साला, किसी बीस बरस की लड़की को लेकर। कोर्ट का दरवाजा खटखटाने पर आजकल हजार डालर महीने का भेजता है, बास्टर्ड।"[11] विदेशी परिवेश के बढ़ते दाम्पत्य विघटन के लिए मरील और उसका पति एक उदाहरण के रूप में आता है। 'आओ पेपे घर चलें' उपन्यास की मरील और उसका पति के बीच के तनाव के कारण उसकी बेटियाँ पिसती हैं और यह तनाव उन्हें बदचलन जिंदगी की ओर ले जाता है।

हांगकांग से प्रभा का परिचय आइवी नामक टैक्सी चलानेवाली चीनी महिला से होता है। आइवी मजदूरी भी करती थी। वह प्रभा से कहती है "काम और काम। पैसे की चमक भी पहले पहल देखी। मैं एक छः तल्ले की फैक्ट्री में कमीज सिलायी करती थी। हम लोग पांच सौ औरतें थीं...हमारी डॉरमेटरी अलग थी। सुबह आठ बजे से बारह बजे फिर एक बजे से रात आठ बजे तक कपड़े सिलना पड़ता। पूरे चीन में दो ही दिन छुट्टी के होते हैं। पहली मई और चीन का स्वतंत्रता दिवस।"[12]

इससे पाठकों को चीन के मजदूरों की स्थिति की सूचना मिलती है । लेखिका आइवी की ईमानदारी पर आकृष्ट होती है । 'अग्निसंभवा' उपन्यास में विदेशी परिवेश की एकल परिवार की प्रबलता है । आइवी को शादी के बाद ससुराल से पति तथा सासू मां से कई पीड़ाएँ झेलनी पड़ती हैं । मिस्टर डिक्रे एकल परिवार निभाता है । मगर उनके परिवार में संबंधों में विघटन की स्थिति नहीं आती है । मिस्टर शिव एकल परिवार निभाता है और संबंधों में विघटन की स्थिति भी उस परिवार में आती है ।

'एड्स' उपन्यास विदेशी परिवेश के एकल परिवार के मूल्य विघटन की सूचना देती है । इस उपन्यास के एन्ड्रू की पत्नी सोफिया उसे धोखा देने के कारण पत्नी पर भरोसा छूट जाता है । एन्ड्रू स्पेंसर प्रभा से कहता है "हम लोगों के बीच मौत है, जिंदगी नहीं । एक मरता हुआ प्यार है । हर दिन उसकी हर सांस एक-एक धोखा दे रही है । हां, यों ठगे जाने का भाव मुझे बार-बार लगता है जैसे कोई मेरा माखौल उड़ा रहा है ।"[13] पत्नी को एड्स की बीमारी होने के कारण सारी दुनिया से अलगाव की स्थिति एन्ड्रू को झेलना पड़ता है ।

भारतीय परिवेश एवं संस्कृति

विदेशी परिवेश की स्त्रियों की तुलना में भारतीय समाज में सहती रहने वाली स्त्री पात्रों की संख्या ज्यादा दिखाई देती है । 'अपने अपने चेहरे' की मिसेज गोयनका, 'पीली आँधी' की ताईजी, 'छिन्नमस्ता' की प्रिया की सासू माँ तथा छोटी माँ; 'तालाबंदी' की सुमित्रा आदि उदाहरण हैं ।

प्रभा खेतान के 'अपने अपने चेहरे' उपन्यास की रीतू को पति के विवाहेतर संबंध के कारण तलाक लेनी पड़ती है । डॉ. भगवतीशरण मिश्र लिखते हैं "रीतू अपने वैवाहिक जीवन में सामंजस्य स्थापित करने का पूर्ण प्रयत्न करती है किन्तु इसमें सफल नहीं हो पाती । वह अधिक अपमान नहीं सहन कर सकती । वह एक पढ़ी-लिखी नारी है जो किसी के अंगूठे के नीचे वह भी एक सौत की उपस्थिति में कदापि नहीं रह सकती । अन्तत: वह एक कठोर निर्णय लेती है और अधिक अपमान नहीं झेल कर अपने पिता राजेन्द्र गोयनका के पास मायके लौट आती है ।"[14] रीतू जैसी शिक्षित भारतीय स्त्री में शोषण को सहती रहने की प्रवृत्ति कम दिखती है ।

'आओ पेपे घर चलें' उपन्यास की आइलिन भारत में बंदर की पूजा करने के कारण प्रभा खेतान को मजाक उठाती है । तब प्रभा खेतान उससे गुस्सा हो जाती है । लेखिका अपनी आस्थाओं में आइलिन द्वारा चोट पहुँचाने की कोशिश करते समय उसके खिलाफ आवाज उठाती हैं ।

ग्रामीण परिवेश एवं संस्कृति

प्रभा खेतान की रचनाओं में ग्रामीण क्षेत्रों के पात्रों भी आते हैं । ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के आपसी प्यार, विश्वास, सहानुभूति आदि बातों को प्रभा की 'छिन्नमस्ता', 'पीली आँधी', 'अन्या से अनन्या' आदि रचनाओं में मिलती है । 'छिन्नमस्ता' की दाई माँ, खेदरवा, चमेलिया, हरिया नौकर आदि ग्रामीण क्षेत्रों के पात्रों के लिए उदाहरण हैं । 'छिन्नमस्ता' की प्रिया से दाई माँ पराया होकर भी असीम प्यार करती हैं । दाई माँ के माध्यम से प्रभा खेतान ने ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के निस्वार्थ प्यार को व्यक्त किया है । 'छिन्नमस्ता' की प्रिया का सबकुछ दाई माँ थी । वे दाई माँ से पूछती हैं "अपने देश भी नहीं दाई माँ? सच बता, मेरे पास ही रहेगी ना दाई माँ? इस घर में खाली तू ही तो मुझे प्यार करती है और कोई प्यार नहीं करता या फिर बाबूजी मुझे प्यार करते थे । बाबूजी इतनी जल्दी क्यों चले गये दाई माँ?"[15] प्रिया को दाई माँ के कारण घर की असुरक्षा से राहत मिलती है ।

'पीली आँधी' उपन्यास के माधो के दस साल की उम्र में पिताजी की हत्या कंवरमानसिंह द्वारा की जाती है । सुजानगढ के अकाल के कारण उसे उसकी माँ को बीमार होकर भी चाचा के साथ बंगाल जाकर रहना पड़ता है और खूब मेहनत भी करनी पड़ती है । ग्रामीण क्षेत्र से आकर भी माधो अपनी मेहनत के बल पर आर्थिक रूप में मजबूत बन जाता है।

शहरी परिवेश एवं संस्कृति

प्रभा खेतान के 'छिन्नमस्ता', 'आओ पेपे घर चलें', 'स्त्री पक्ष', 'एड्स', 'अन्या से अनन्या', 'अपने अपने चेहरे', 'अग्निसंभवा' आदि रचनाओं में शहरी परिवेश का जिक्र आता है । व्यापार के कारण प्रभा खेतान को बड़े बड़े शहरों में जानी पड़ती है । संबंधों में विघटन तथा मूल्यों में विघटन शहरी परिवेश की पहचान बन जाती है ।

मारवाड़ी परिवेश एवं संस्कृति

प्रभा खेतान मारवाड़ी समाज की स्त्री का प्रतिनिधित्व करती हैं । मारवाड़ी समाज की स्त्री के दु:ख-दर्द से वे परिचित हैं । इसलिए कुछ उपन्यासों में मारवाड़ी परिवार की स्थितियों को भी दिखाया गया है । प्रभा को पारंपरिक मारवाड़ी समाज से एक सफल उद्यमी बनने की यात्रा में कई संघर्षों का सामना करना पड़ा । प्रभा खेतान की रचनाओं में रूढिवादी मारवाड़ी समाज का जिक्र भी मिलता है । प्रभा खेतान की अम्मा कभी कभी रूढिवादी नज़र आती है तो कभी कभी स्वतंत्र तथा प्रगतिशील विचारों से युक्त स्त्री जैसे नज़र आती है । मारवाड़ी समाज में भी लड़कियों के मासिक धर्म को पवित्र नहीं माना जाता है । पिताजी की मृत्यु के वार्षिक दिन में मासिक धर्म शुरू होने के कारण उसकी माँ लोगों के सामने इस बात को छुपाने के बारे में सोचकर प्रभा से कहती है "मरणजोगी ! आज ही तुझे यह सब होना था...? कल तेरे बाबूजी की बरषोदी [वार्षिकी] है । ताई-चाची सब आएँगी और ताई की गिद्ध दृष्टि से कुछ छिप नहीं सकता-भगवती, यह तो साढ़े दस की उमर में ही चौदह की लगने लगी ।"[16] 'छिन्नमस्ता' उपन्यास की प्रिया को भी प्रभा

के इस अनुभव से गुजरनी पड़ती है । स्त्री के मन को कमज़ोर बनाने में उसकी पारिवारिक स्थिति भी कारण बन जाती है । मारवाड़ी होने के कारण प्रभा को अपने परिवेश से व्यापार की दुनिया को समझने का मौका मिल जाता है । मारवाड़ी समाज में बेटी दान की वस्तु है । अत: प्रभा खेतान की माँ उनकी कमाई से कुछ नहीं लेती है और जीजी लोगों के घर गयी तो भी बिना पैसे दिए पानी तक नहीं पीती हैं । इस बात को प्रभा हेल्गा नामक विदेशी स्त्री से कहती हैं । बेटी को दान समझने वाले समाज में प्रभा लौटने की चाहत रखने के कारण हेल्गा को उस सामाजिक व्यवस्था अजीब लगती है । प्रभा खेतान ऐसी दुर्गति अपनी छोटी बहिनों तथा बेटियों को नहीं आने के लिए लड़ाई लड़ने की कामना करती हैं ।

मारवाड़ी परिवेश के एकल परिवार में भी संबंधों में विघटन आ जाता है। 'अपने अपने चेहरे' उपन्यास की अविवाहित रमा मिस्टर गोयनका से प्यार करने के कारण मिस्टर गोयनका और मिसेज गोयनका के वैवाहिक जीवन में तनाव आ जाता है ।

प्रभा को मारवाड़ी होने के कारण प्रेसिडेंसी कॉलेज से अपमान झेलनी पड़ती है । प्रेसिडेंसी कॉलेज की कक्षा से अनिता नामक बंगाली लड़की प्रभा से कहती है "परम्परा? बंगाल में तुम मारवाड़ियों की कोई परम्परा नहीं । तुम तो बाहर से आए हो । लोटा-कम्बल लेकर आए और हमारे बंगाल को लूट-लूटकर इतनी-इतनी बड़ी मिल्कियत खड़ी कर ली ।"[17] नयी जगह जाकर बसना और वहाँ अपनी पहचान बनाना बड़े संघर्षों के बाद हो जाता है । प्रभा के पूर्वज राजस्थान से बंगाल में जाकर बसे और वहाँ अपनी पहचान बनाने के लिए उन्हें बहुत संघर्ष करना पड़ा है ।

विधवा होकर भी 'पीली आँधी' की ताईजी सुराणाजी से भावनात्मक लगाव गोपनीय रूप में रखती हैं । लेकिन वे परंपरा को छोड़कर सुराणाजी को शादी करने के लिए तैयार नहीं होती है । ताईजी सुराणाजी से कहती हैं "परंपरा छोडूं भी कैसे? घर टिकेगा? उनकी इज्जत…."[18] अविवाहित प्रभा को विवाहित पुरुष के प्यार में फंसने के कारण समाज दोषी के दर्जे में रखा जाता है । प्रभा की स्थिति को समझकर आइलिन उसे सलाह देती है । लेखिका लिखती हैं "एक अविवाहित लड़की को विवाहित पुरुष से दूर रहना चाहिए । उस पुरुष का कुछ नहीं बिगडेगा, लेकिन समाज तुम्हें दूसरी औरत के रूप में कटघरे में खड़ा कर चाबुक लगाएगा ।"19 प्रभा खेतान समाज की आलोचना भरी निगाह के भावजूद भी विवाहित पुरुष के प्यार से पीछे नहीं होती हैं ।

'पीली आँधी' की सोमा के विवाह के समय पर भी उसके घरवालों से कुछ अमूल्य वस्तुओं लड़केवालों को देने की बात आती है । मोहन कहता है "हमारी बड़ी मां के लिए गले में सोने का भारी चेन बनवा देना । छोटे बच्चों की पोशाक अलग से । मुद्दे के दिन ही शाम को हरा-भरया का नेग होगा । इक्कीस खुमचें समूचे फल के, इक्कीस लड्डू के, पांच मेवे के और एक लाख इक्यावन हजार नगदी । साथ ही पुरुषों की मिलनी भी होगी ।"[20] दहेज कहीं खुले रूप में है तो कहीं गोपनीय रूप में । दहेज की स्थिति सिर्फ मारवाड़ी समाज में ही नहीं बल्कि भारत के हर कहीं भिन्न भिन्न रूपों में देखने को मिलता है ।

संदर्भ

1. प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार, डॉ.उषा कीर्ति राणावत, पृ 98
2. भारतीय संस्कृति, डॉ.प्रीतिप्रभा गोयल, पृ. 3
3. प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार, डॉ.उषा कीर्ति राणावत, पृ.5
4. अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, पृ.141
5. अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, पृ.141
6. अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, पृ.141
7. अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, पृ.141
8. आओ पेपे घर चलें-प्रभा खेतान, पृ. 68
9. अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, पृ.143
10. अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान , पृ.130
11. आओ पेपे घर चलें-प्रभा खेतान, पृ. 24
12. हंस, अप्रैल 1992, पृ.59
13. आज पूजा वार्षिकांक, पृ.85
14. हिंदी के चर्चित उपन्यासकार, डॉ. भगवतीशरण मिश्र, पृ.396-397
15. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान , पृ.17
16. अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान , पृ.39
17. अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान , पृ.43
18. पीली आँधी, प्रभा खेतान, पृ.290
19. अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान , पृ.142
20. पीली आँधी, प्रभा खेतान, पृ.168-169
21. प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार, डॉ.उषाकीर्ति राणावत, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2005
22. भारतीय संस्कृति, डॉ.प्रीतिप्रभा गोयल, नवभारत प्रकाशन, जोधपुर, प्रथम संस्करण 2001
23. अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-2007, पहला संस्करण -2010, पहली आवृत्ति-2012
24. आओ पेपे घर चलें –प्रभा खेतान, सरस्वती विहार, दिल्ली, प्रथम संस्करण :1990

25. हिंदी के चर्चित उपन्यासकार, डॉ. भगवतीशरण मिश्र, प्रथम संस्करण 2010
26. छिन्नमस्ता, प्रभा खेतान, राजकमल पेपर बैक्स, प्रकाशन वर्ष-1993, पहला संस्करण-1997, चौधी आवृत्ति-2006, दूसरा संस्करण-2010, पहली आवृत्ति-2012, पृ.132
27. पीली आँधी, प्रभा खेतान, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण- 2002, तृतीय संस्करण-2011
28. हंस, अप्रैल 1992
29. आज पूजा वार्षिकांक